प्रकाश स्तम्भ था दादी प्रकाशमणि का जीवन

युग कोई सा भी हो, परन्तु मनुष्य चाहे तो अपने अन्दर छिपी शक्तियों को ईश्वर के सान्निध्य से जागृत कर महापुरुष अथवा देवतुल्य बन सकता है। यह विधा केवल पुरुषों पर ही नहीं बल्कि महिलाओं पर भी समान रूप से लागू होती है। तभी तो भारतमाता और वन्देमातरम् की गाथा आज भी लोगों को उनके गौरव और शौर्य के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। ऐसी ही एक महान विभूति ने इस कथन को ऐसे युग में साकार किया जिस युग में इस तरह की सिर्फ कल्पना की जा सकती है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यदि सचमुच नारी अपनी शक्तियों को पहचान ले तो वह दुर्गा, काली और शीतला बन स्वयं का ही नहीं बल्कि सर्व जगत को विकारों और आसुरीयता के दलदल से मुक्त कराने में महान भूमिका निभा सकती है।

दादी प्रकाशमणि का जन्म 1 जून, 1922 को हैदराबाद (सिन्ध) में एक बड़े ज्योतिषी के घर हुआ। वे बहुत दूरांदेशी ज्योतिषी थे। दादी प्रकाशमणि का बचपन का नाम रमा था। इनके पिताजी को बचपन से ही इनकी महानता के संकेत मिलने लगे थे। उन्हें यह आभास हो गया था कि एक दिन यह बालिका एक महान साधिका बन पूरे विश्व में एक नया क्षितिज लाने के निमित्त बनेगी। दादीजी में बचपन काल से ही महानता के गुण विद्यमान थे। अध्यात्म प्रज्ञा दादीजी में, बचपन से ही हर कर्म में दिव्यता और प्रेम भाव का संदेश समाया होता था। किशोरावस्था में प्रवेश करते ही दादीजी की आभा प्रखर होने लगी और 14 वर्ष की आयु में सन् 1936 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आयी। चूंकि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा में ईश्वरीय शक्ति की उपस्थिति थी। इसलिए उनके सामने आते ही दादी जी को अनेकों साक्षात्कार हुए। उन्होंने उसी समय यह निश्चय कर लिया कि अब हमारा जीवन सदगुणों से युक्त ईश्वरीय सेवा के लिए रहेगा। अपने कठिन निर्णय पर अडिग रहते हुए वे सन् 1937 में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आध्यात्मिक क्रान्ति के लक्ष्य के प्रति समर्पित हो गयी। पिताजी ने दादी जी को सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी।

तरुण अवस्था में रमा की लगन, निष्ठा, प्रतिभा और दिव्यता की आभा को देखते हुए संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने रमा से नाम बदल प्रकाशमणि रखा। उन्हें यह विश्वास हो गया था कि यह एक सच्ची मणि है और इसका आध्यात्मिक प्रकाश पूरे विश्व को आलोकित करेगा। दादी प्रकाशमणि ब्रह्मा बाबा के निर्देशन को शिघ्र ही अपने में उतार लेती थी। उन्हें दिन-रात अपने को दैवी गुणों से सजाने तथा सर्व मनुष्यात्माओं को दु:ख-अशान्ति से मुक्ति दिलाने का फिक्र रहता था। उन्हें दूसरों का दर्द स्वयं का दर्द महसूस होता था। दादीजी के तीव्र पुरुषार्थ और आत्मबल ने उन्हें श्रेष्ठ मार्गदर्शक के साथ-साथ एक कुशल प्रशासक की गुणवत्ता से भरपूर कर दिया। 18 जनवरी, 1969 को संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने शरीर का त्याग करते समय अपनी सारी शक्तियां दादी प्रकाशमणि को सौंपते हुए उन्हें मुख्य प्रशासिका की जिम्मेवारी दी।

अब दादी प्रकाशमणि, ईश्वरीय मिशन को आगे बढ़ाने के लिए संस्था के सर्व अनुयाइयों के साथ तन-मन से लग गयी। उन्होंने अपने जीवन काल में वह कर दिखाया जिसके लिए साधारण मनुष्य सोच भी नहीं सकता है। दादी जी में नेतृत्व की अपार क्षमता थी। वे इतनी तपोनिष्ठ हो गयी थी कि उनके अन्दर नेतृत्व के साथ-साथ मातृत्व का असीम भाव आ गया था। वे एक माँ के समान पालना करती थी। उनकी

मनोस्थिति इतनी ऊंची हो गयी थी कि किसी की भी कमी-कमजोरी, धर्म, जाति-पात का भेदभाव उनके चित्त को स्पर्श तक नहीं करता था। सामने आने वाले व्यक्ति के संकल्पों को वे शिघ्र ही पहचान उसे प्यार से समाधान देती थी। करुणामयी दादी प्रकाशमणि की आभा अब सभी मनुष्यात्माओं को आलोकित करने लगी थी।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि के सान्निध्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने एक नया आयाम स्थापित किया। जब दादी प्रकाशमणि इस संस्था की मुख्य प्रशासिका बनी तब सिर्फ 500 शाखायें थी परन्तु इनके महान नेतृत्व में विश्व के 120 देशों में लाखों अनुयाइयों के साथ एक विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। दादी जी की नैसर्गिक प्रतिभा ने केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोगों के हृदय को शीतलता प्रदान की। उन्होंने विश्व के सैकड़ों देशों में जाकर आध्यात्मिक क्रान्ति की नींव रखी और लोगों के जीवन में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। दादी जी मास्टर सर्वशक्तिवान बन, जो भी मनुष्यात्मायें उनके सामने आती उन्हें आत्मिक रूप से शक्ति प्रदान कर सशक्तिशाली बना देती थी। दादीजी के सामने कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनसे मिलकर संतुष्ट न हो। उनकी इस पालना ने उन्हें 'दादी माँ' की उपाधि दी। हर उम्र के लोग उन्हें प्यार से दादीजी कहा करते थे।

दादीजी सदैव स्वयं को ट्रस्टी और निमित्त समझकर चलती थी। दादीजी ने दिव्य दृष्टि, सहज वृत्ति और मन-मस्तिष्क के विशेष गुणों के बलबूते इस संस्था को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दी तथा भारतीय संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का महान कार्य किया। दादीजी स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का संदेश अपने कर्मों से देती थी। इस महान कर्त्तव्यों के बल पर उन्हें कई बड़ी-बड़ी उपाधियों से नवाजा गया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शान्ति दूत पुरस्कार तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें डाक्टरेट खिताब दिया गया। दादीजी मूल्यों के साथ-साथ स्वस्थ एवं स्वच्छ प्रकृति की भी पक्षधर थी। इसके लिए सदैव वे प्रयासरत रहती थी और यही कहती थी कि जिस तरह से श्रेष्ठ जीवन के लिए मानवीय मूल्य जरूरी है उसी तरह श्रेष्ठ जिंदगी के लिए शुद्ध पर्यावरण और श्रेष्ठ प्रकृति की भी आवश्यकता है। दादी जी का यह आध्यात्मिक प्रकाश निरंतर पूरे विश्व को आलोकित करते हुए 25 अगस्त, 2007 को प्रात: 10 बजकर 5 मिनट पर मौन हो गया। इस तरह से एक आध्यात्मिक सशक्तिकरण युग का अन्त हो गया। परन्तु उनके पार्थिव शरीर से निकली हुई मणि आज भी लाखों लोगों को आलोकित करते हुए उनके जीवन में प्रेरणा प्रदान कर रही है। उनकी स्मृति में संस्था के मुख्यालय, शान्तिवन में बनाया गया **'प्रकाश स्तम्भ'** उनकी अनुपस्थिति में भी उपस्थिति का आभास कराता रहेगा।

ऐसी वन्दनीय, पूज्यनीय दादी माँ की अमर गाथा युगों-युगों तक भारतीय संस्कृति के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गयी। ऐसी महान विभूति को शु-शत् नमन।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com